

SHRI RAMESH BABA MAHARAJ

Shri Ramesh Baba Maharaj is a renounced saint who has been living at Maangarh hill of Sacred Barsana Dham in Braj-Vrindavan (Divine Playfield of Lord Krishna) for the last 65 years. He is a living legend who has given up his entire life in protecting & preserving divine culture of Braj, its topography, ecology, environment and spreading holy name of the Lord all around the world.

2. Born on December 24, 1937 in Prayagraj, Baba Maharaj renounced the material world at tender age of 15 and walked down to Braj in search of ultimate spiritual bliss. He had already passed his graduation before leaving his birth place in 1953 and inculcated exceptional musical skills in himself. Baba Maharaj had developed deep and intense devotion for Shri Krishna and Shri Radha Rani by the time he reached to Barsana and got fully tossed in spreading & preaching Highest of Spiritual Philosophy as described in our ancient religious texts and literature. Ever Since he came to Barsana, he always kept thinking about degrading situation of Braj culture, its ecology & topography.He got deeply concerned about deteriorating state of sacred Braj area. He realized that holy name of Lord is also disappearing; Lord Krishna's pastime places had also been in really bad shape. The environment and topography has also depleted. He then vowed to give up his every single moment to preserve and protect culture & traditions, environment & ecology, spirituality and inviolability of sacred Braj land.

3. In past 65 years, under the noble and divine guidance of Baba Maharaj, over 36 Kunds (water bodies) of Braj have been protected and preserved so far. Sacred hilly terrain of Braj area measuring about 5232 hectare have been protected and subsequently declared as forest after a long movement which was led under his courageous and spiritual leadership. In 2007, a cow shelter home (Gaushala) was started by him in Barsana with a firm vision to serve 'Gau Mata' (mother cow) with utmost sincerely and devotion. The same Guashala, now termed to be largest single gated Gaushala in India, is now nurturing and serving about 55000 cattle wealth in very diligent way. In an effort to preserve and re-establish Braj Culture, about 25 years ago, Baba Maharaj started a 40 days Pad Yatra (Foot March) to circumambulate 84 kos Braj, which is pouplarly known as 'Radha Rani Braj Yatra'. It is now world's largest Braj 84 Kos Yatra in which about 20000 pilgrims from all over the world participate. Lodging, Food, transportation and Medication are served free of cost to all pilgrims. As part of the same objective, Prabhat pheries (Morning Kirtan walk) are being operated in more than 30000 villages of different states of India under his inspiration.

4. Recently, Shri Baba Maharaj announced to plant 1.25 Lakh trees in Braj followed by a target of planting around 1.25 Crore trees.Hundreds and thousands of trees have already been planted in various villages. For the past 5 years, Shri Baba Maharaj has been leading the movement for bring Yamuna River back to Braj. He has observed that the water flown in Braj through Yamuna riverbed is nothing but sewage water of Delhi. In April 2013 and then in March 2015, the movement rose up to national level and forced the leader to think about the issue and caused debates in the Parliament of India.Free distribution of monthly magazines and numerous highly venerable Books, written by him, to thousands of devotees every year is a project taken up under his guidance to spread wisdom among people all around the globe. Free daily food (Prasadam) for more than 1500 people every day is being served relentlessly for past several years.

5. For the past 64 years, Baba Maharaj has been giving Satsang (Preaching) for 3 times a day. This satsang is dear and desirable to all Sidhha, Saadhak, and Saadhus. Hundreds have renounced their home just to be with him and walk on path as showed by him. He has been teaching Shrimad Bhagwat Maha Puran since years at Maan Mandir. Thousands of students learned the secrets of it and some of them now are well known Bhagwatam Speakers in the country.

पद्म श्री

श्री रमेश बाबा महाराज



श्री रमेश बाबा महाराज एक त्यागी संत हैं जो पिछले 65 वर्ष से बृजवृंदावन (भगवान कृष्ण का दिव्य लीला स्थल) में पवित्र बरसाना धाम के मानगढ़ पर्वत पर रह रहे हैं। आप एक ऐसी महान आत्मा हैं जिन्होंने बृज की दिव्य संस्कृति, इसकी भौगोलिक स्थिति, पारिस्थिति की,पर्यावरण का संरक्षण करने और उसे बनाए रखने एवं पूरे विश्व में भगवत नाम का प्रचार-प्रसार करने के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया है।

2. आपका जन्म 24 दिसम्बर,1937 को प्रयागराज में हुआ । आपने केवल15 वर्ष की छोटी आयु में ही इस भौतिक जगत का परित्याग कर दिया और परम आत्मिक सत्य की प्राप्ति के लिए आप बृज धाम आ गए । अपने जन्म स्थान का त्याग करने से पहले ही 1953 में आपने स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण कर ली । आप विशिष्ट संगीत विधाओं में निष्णात हो गए । आप बरसाना पहुंचने से पहले ही भगवान श्री कृष्ण और श्री राधा रानी की परम भक्ति में पूर्णत: लीन हो गए और आप पौराणिक धार्मिक ग्रंथों और साहित्य में वर्णित आध्यात्मिक दर्शन का पूरी तरह प्रचार-प्रसार करने लगे थे। बरसाना में अपने आगमन के समय से आप बृज संस्कृति,इसकी पारिस्थिति की और भौगोलिक स्थिति में आ रही गिरावट को लेकर हमेशा सोचते रहते । आप पवित्र बृजधाम की स्थिति में आ रही गिरावट को लेकर बहुत चिंतित हैं। आपको यह प्रतीत होने लगा कि पवित्र भगवत नाम की महिमा विलुप्त होती जा रही है; जिन स्थानों का भगवान कृष्ण से संबंध था उनकी स्थिति भी बहुत दयनीय हो गई है। पर्यावरण और भौगोलिक स्थिति भी जीर्ण-क्षीण हो गई है। इन सभी तथ्यों को देखते हुए आपने पवित्र बृजधाम की संस्कृति और परंपराओं, पर्यावरण और पारिस्थितिकी,अध्यात्म तथा पावन बृजधाम की पवित्रता का संरक्षण करने एवं उसे बनाए रखने के लिए अपने जीवन का प्रत्येक क्षण अर्पित करने का संकल्प लिया।

3. विगत 65 वर्षों में, आपके भव्य और दिव्य मार्गदर्शन के अधीन अब तक बृज के 36 से भी अधिक कुंडों का संरक्षण किया जा चुका है। बृज क्षेत्र का लगभग 5232 हेक्टेयर पवित्र पर्वतीय क्षेत्र को भी संरक्षित किया जा चुका है और तत्पश्चात आपके साहसिक और आध्यात्मिक नेतृत्व में एक लंबे आंदोलन के बाद इस क्षेत्र को वन क्षेत्र घोषित किया गया है।अत्यंत निष्ठा और समर्पण भाव से "गोमाता" की सेवा करने के दृढ़ संकल्प को लेकर आपने वर्ष 2007 में बरसाना में एक गोशाला प्रारंभ की। अब यह गोशाला भारत में एकल द्वार वाली सबसे बड़ी गोशाला मानी जाती है और यहां लगभग 55,000 गऊओं का उत्तम तरीके से पालन पोषण हो रहा है। लगभग 25 वर्ष पूर्व, बृज संस्कृति के संरक्षण और उसकी पुनः स्थापना के लिए अपने प्रयासों से आपने 84 कोसी बृजधाम की 40 दिवसीय परिक्रमा शुरू की जिसे आमतौर पर 'राधा रानी बृज यात्रा' के रूप में जाना जाता है। अब यह विश्व की सबसे लंबी 84 कोसी यात्रा है जिसमें विश्व के सभी स्थानों से लगभग 20,000 श्रृद्धालु भाग लेते हैं। सभी श्रृद्धालुओं के लिए रहने, खान-पान, परिवहन और चिकित्सीय देखभाल की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। इसी उद्देश्य के अंग के रूप में आपकी प्रेरणा से भारत के विभिन्न राज्यों के 30,000 से भी अधिक गाँवों में प्रभात-फेरियां हो रही हैं।

4. हाल ही में आपने बृज क्षेत्र में 1.25 लाख वृक्ष लगाने की घोषणा की है और इसके बाद लगभग 1.25 करोड़ वृक्ष लगाने का लक्ष्य रखा है। अब तक विभिन्न गांवों में हजारों की संख्या में वृक्ष लगाए जा चुके हैं। विगत 5 वर्षों से आप यमुना नदी को पुन: बृज में लाने के लिए चलाए जा रहे आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं। आपने यह देखा है कि यमुना नदी से होकर बृज में आने वाला पानी दिल्ली के सीवर से आने वाला पानी जैसा ही है। अप्रैल, 2013 में और फिर उसके बाद मार्च, 2015 में इस आंदोलन ने राष्ट्रीय आंदोलन का रूप ले लिया था और नेताओं को इस मामले पर सोचने तथा भारत की संसद में इस विषय पर विचार-विमर्श करने के लिए विवश कर दिया।हर वर्ष आपके हजारों अनुयायियों को मासिक पत्रिकाओं और आपके द्वारा रचित कई महत्वपूर्ण पुस्तकों का नि:शुल्क वितरण करना आपके मार्गदर्शन में एक ऐसी परियोजना है जिसका उद्देश्य समूचे विश्व में लोगों के बीच सन्मार्ग का प्रचार-प्रसार करना है। पिछले कई वर्षों से हर दिन 1500 से भी अधिक लोगों के लिए प्रसादम अर्थात् भोजन की अनवरत नि:शुल्क सेवा की जा रही है।

5. विगत 64 वर्षों से आप अपने अनुयायियों को दिन में 3 बार उपदेश देते हैं। यह उपदेश सभी सिद्धों, साधक, और साधुओं को प्रिय और रोचक लगता है। कई सौ लोग अपने घर-बार का त्याग करके आपकी संगति में आ गए हैं और आपके दिखाए गए मार्ग पर चल रहे हैं। आप वर्षों से मान-मंदिर में श्रीमद भागवत महापुराण की कथा कर रहे हैं। हजारों छात्रों ने इसके मर्म को समझा और अब उनमें से कुछेक देश के प्रसिद्ध कथावाचक हैं।